बीकानेर: परिचय व जैव विविधता

- बीकानेर की स्थापना राव बीका द्वारा सन् 1485 में की गई। देशनोक, कोलायत यहाँ के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल हैं। शहर पर्यटन की दृष्टि से समृद्ध हैं।
- बीकानेर जिला राजस्थान में 21° 11' से 29° 03' उत्तरी अक्षांश और 74° 22' से 74° 54' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। जो औसतन समुद्र तल से 150 से 300 मीटर की ऊँचाई पर है। बीकानेर का क्षेत्रफल 30247.90 वर्ग किमी. है। जिसमें से वन क्षेत्र – 111.738, कृषि योग्य सिंचित क्षेत्र – 83.078, कृषि योग्य असिंचित क्षेत्र – 1205.058, कृषि योग्य बंजर भूमि – 1178.826, कृषि हेतु अनुपलब्ध भूमि – 145.700, ओरण के रूप में – 44.966 वर्ग किमी. क्षेत्र है। औसतन तापक्रम 2° से 50° से. है। जनवरी माह में तापमान जमाव बिन्दु से नीचे भी पहुँच जाता है। वर्षा 200–400 मिमी. प्रति वर्ष औसतन है। इंदिरा गाँधी नहर मुख्य जल स्रोत है। भूमिगत जल साधारणतया क्षारीय है। यहाँ कोई बारहमासी नदी नहीं है। गजनेर, कोलायत, कोडमदेसर, दियातरा एवं गोलरी ऐसे जल स्रोत हैं, जहां पानी लगभग पूरे वर्ष रहता है।
- जैव विविधता की दृष्टि से यहाँ की वनस्पति मूल रूप से मरुद्भिद् है। यहाँ 36 प्रजाति के पेड़, पौधे एवं लताएं व 12 घास की प्रजातियां पाई जाती हैं। क्षेत्र में करवाये गये सिंचित क्षेत्र के नहर किनारे वृक्षारोपण, ग्रामीण ईंधन वृक्षारोपण तथा आबादी वृक्षारोपणों से जैव विविधता में बदलाव आया है। जिले में स्तनधारी वर्ग के 19 ; पक्षी वर्ग के 155 एवं सरीसृप वर्ग की 30 वन्यजीव प्रजातियाँ पायी जाती हैं।
- वन उपज के सतत उपयोग के प्रबंधन हेतु विभागीय कार्य मंडल के तहत पातन कार्य किया जा रहा है। पातन से प्राप्त होने वाली मुख्य इमारती लकड़ी प्रजातियां शीशम, बबूल, सफेदा एवं रोहिड़ा तथा मुख्य जलाऊ लकड़ी प्रजातियां कीकर, जूलीफ्लोरा, सफेदा आदि हैं।
- जिला मुख्य रूप से कृषि एवं पशुपालन प्रधान क्षेत्र है। सिंचाई से होने वाली कृषि के कारण यहाँ के लोगों के खान–पान में काफी बदलाव आया है। समय के साथ परम्परागत फसलों जैसे बाजरा, हरा चना, ज्वार, तिल आदि का स्थान सिंचित क्षेत्र में कपास, गन्ना, मूंगफली, गेहूं, सरसों, चावल, मोठ, मस्र, मूंग, ग्वार, राई, अरंड, चौंवला, चुकन्दर, धनिया, मटर आदि की पैदावार ने ले लिया है। यहाँ पर किन्नू एवं खजूर फल का उत्पादन होता है।
- 2011 की जनगणना के आधार पर जिले की कुल आबादी 2367745 है, जिसमें से पुरुष – 1243916 एवं स्त्रियाँ 1123829 हैं।
- जिले में पशुधन गणना 2007 के अनुसार कुल 2572950 पशुधन है जिसमें से भेड़ – 799728, भैंस एवं भैंसे – 131272, बकरियाँ – 909622, गाय, बैल – 671078, ऊंट – 49615, घोड़े – 1088, खच्चर – 46 एवं गधे–9700 हैं।
- नहर के आने से इस मरु भूमि की तस्वीर को तेजी से बदल दिया है और नए नगर क्षेत्र, मंडियां, चरखा उद्योग, तेल की मिलें, चावल की मिलें आदि इस क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योग स्थापित हुए हैं। जिले कि प्रमुख मंडियां यथा बीकानेर ऊन हेतु एवं नोखा, खाजूवाला, छतरगढ़ अनाज विपणन हेतु प्रसिद्ध है। जिले में भेड़ व ऊंट की ऊन से कंबल आदि ऊनी सामान की उन्नत वस्तुओं का निर्माण होता है।
- औषधीय प्रजातियाँ जैसे गोखरू, पील्, सनाय, धतूरा, आंवला, शंखपुष्पी, अरण्डी एवं ग्वार–पाठा पाई जाती हैं।
- जैसे–जैसे नहर एवं इसके आसपास के क्षेत्र में वृक्षारोपण कार्य करवाये गए हैं वैसे–वैसे जीव जन्तुओं के प्राकृतिक आवास में बढ़ोतरी हुई है। इसके फलस्वरूप वन्य जीवों की संख्या में भी काफी वृद्धि हुई है। क्षेत्र जैव विविधता एवं वन्य जीव प्रबंधन हेतु कार्य आयोजना में पृथक वृत्त का प्रावधान किया गया है। जैविक विविधता संरक्षण हेतु बीकानेर जिले में किये जा रहे प्रयासों में बीछवाल में 16.5 हेक्टेयर वन क्षेत्र में एक नया जन्तुआलय स्थापित करना एवं दियातरा, जोडबीड़, देशनोक, मुकाम, गजनेर में कन्जरवेशन एवं कम्युनिटी रिजर्व क्षेत्र स्थापित करना प्रमुख है।

बोर्ड की गतिविधियाँ

(जैव विविधता अधिनियम, 2002 की धारा 22 के प्रावधानानुसार, राजस्थान सरकार द्वारा राज्यादेश क्रमांक प.4(8) वन/2005/पार्ट–1 जयपुर, दिनांक 14 सितम्बर, 2010 से राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड की स्थापना की गई।)

- अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस समारोह का आयोजन

- जैव विविधता विषयक सामग्री का प्रकाशन

- कार्यशाला, प्रशिक्षण शिविर, इको–क्लब/ बी.एम.सी. सदस्यों का भ्रमण आयोजन

- जैव विविधता प्रबंध समितियों का गठन व लोक जैव विविधता पंजिका तैयार करना

- जैविक संसाधनों का संरक्षण
- जैव विविधता विरासतीय स्थलों का चयन एवं अधिसूचित
- जैव सम्पदा के व्यवसायिक उपयोग का स्टेटस सर्वे
- प्रोत्साहन वर्धन

माता भूमिः पुत्रोऽह पृथिव्याः:

भूमि माता है, समस्त जीव इसके अवयव हैं, हम पृथ्वी पुत्र हैं।
इसका संरक्षण, संवर्धन व सतत् उपयोग करना हमारी कर्तव्य परायणता है।

जैव विविधता : बीकानेर

राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड

7, द्वारिकापुरी, जमना लाल बजाज मार्ग, सी–स्कीम, जयपुर

जैव विविधता

पृथ्वी पर पाये जाने वाले जीवन के पृथक-पृथक रूप ही जैव विविधता है। समृद्ध जैव विविधता बहुत कुछ प्रदान करती है, यथा भोजन, औषधियाँ, वस्त्र, आवास, आमोद-प्रमोद के साधन, सांस्कृतिक, शोध के अवसर, उद्योगों के लिये कच्चा माल और बहुत कुछ।

बीकानेर की समृद्ध जैव विविधता

आवास

औषधियाँ

उद्योग के लिए कच्चा माल

भोज्य पदार्थ

सांस्कृतिक

आमोद-प्रमोद

सब कुछ देती जैव विविधता। सतत् उपयोग से बनी रहेगी समरसता।।
अत: जैव विविधता संरक्षण हेतु हम आज ही शपथ लेवें।

जैव विविधता पर बढ़ते संकट

- आनुवंशिक विविधता में कमी व निम्नीकरण

लुप्त प्रजाति

प्रजाति में होता क्षरण

- आवास विखंडन

- प्राकृतिक संसाधनों का अति उपभोग

- विदेशी प्रजातियों का प्रसार

- जलवायु परिवर्तन

- मरुस्थलीय प्रसार

- भूउपयोग परिवर्तन

- विकास परियोजना का प्रभाव

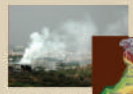

- प्राकृतिक आपदा

70% भूभाग का जैव विविधता सर्वेक्षण ही हुआ है 46000 पादप व 89000 जन्य प्रजातियों का पता लगा है, लगभग 4 लाख प्रजातियां हैं।

- जैव विविधता सूचना का अभाव

आओ हम सब, हमारे व आने वाली पीढियों के लिये,
जैव विविधता का संरक्षण, संवर्धन व सतत उपयोग करें।

जैव विविधता संरक्षण व सुधार के उपाय

स्थानिक प्रजातियों को बढ़ावा देना

विदेशी प्रजातियों का उन्मूलन

जैविक खाद व कीटनाशक का प्रयोग

जैविक संघटकों का सतत उपयोग

अक्षय ऊर्जा का उपयोग

वन्य जीवों का संरक्षण

वनों का संरक्षण

जैव विविधता सूचना का प्रत्येक स्तर पर संकलन करना

अब भी समय है, हम हमारी जैव विविधता को संकट मुक्त कर
आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित करें।